‘‘शिक्षा और संस्कार’’

लता को जिस तरफ मोड़ो उस तरफ मुड़ती है । जब बच्चे छोटे होते है तो लता जैसे होते हैं । उन्हें भी जिस मार्ग पर उन्हें मोड़ते हैं। उसी मार्ग पर जाते है । उन्हें उस प्रकार की शिक्षा दी, जानी चाहिए । मनुष्य के जीवन में शिक्षा और संस्कार एक सिक्के के दो पहलू है ।

शिक्षा हर मनुष्य के लिए जरूरी है । शिक्षा व्यक्ति को जीवन की आजीविका का भी साधन भी है । शिक्षा से व्यक्ति पढ़ लिखकर एक इन्सान बनता है ।हर मनुष्य को अपने निर्वाह के लिए कोई तो कर्म करना पड़ता है । शिक्षा के कारण इन्सान इन्सान बन सकता है । समाज में उसका मान सम्मान प्रतिष्ठा बढ़ती है । आदर विवेक और अच्छे बुरे का फर्क मालूम पड़ता है । शिक्षा के द्वारा उसे उच्च पद प्राप्त हो सकता है । शिक्षित होने पर व्यक्ति सुशिक्षित और संस्कारी बनता है । शिक्षा से ही जीवन भौतिकवादी सुखी बनता है । जीवन रूपी पन का मार्ग सुलभ बनाने के लिए शिक्षा जरूरी है । शिक्षा से ही सुखी जीवन का अर्थ मालूम होता है ।

अपने परिवार का गुजारा करने के लिए कशक्षा अनिवार्य है । शिक्षा अधिकार है आज सरकार ने शिक्षा के लिए बहुत सी सुविधांए भी दी हैं । हर बच्चे को शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए । उससे जातक का बौधिक विकास होता है । बुद्धिमान बनता है। शिक्षा के लिए उस की कुंडली में योग है कि वह भी देखना चाहिए । दुनिया में अपने आप का स्थान जमाना है तो शिक्षा जरूरी है । शिक्षा ककी प्राप्ति होना या ना होना ग्रहों का खेल भी होता है ।

अगर संस्कार की बात करें तो शिक्षा से संस्कार और अनुशासन आता है । दुनियादारी शिक्षा सिखाती है । शिक्षा और संस्कार एक दूसरे से जुड़े हुए हैं । मेरे विचार से शिक्षा से संस्कार आते हैं । पिर शिक्षा देनेवाले शिक्षक जीवन में कितने आते हैं । जब बच्च जन्म लेता है तो सर्व प्रथम माँ उस बच्चे की शिक्षक बनती है । क्या करना, कैसे करना, क्यों करना खाना-पीना सिखाना सब माँ ही करती है । वहीं से बच्चे की शिक्षा का प्रारंभ होता है । माँ शिक्षा के साथ संस्कार भी देती है । इस लिए तो हम अपनी जुबान से कुछ लोगों को खानदानी कहते है । बच्चा कब कैसा होगा उसका विश्लेषण कुंडली से भी कर सकतें है । यहाँ मैंने शिक्षा, संस्कार और ज्योतिष तीनों को जोड़ने का प्रयत्न किया है ।

ऐसा नहीं कि शिक्षित व्यक्ति ही संस्कारी बन सकता है। अशिक्षित भी कई लोग संस्कारी होते है। माँ के बाद विद्यालय के गुरूजी को श्रेय जाता है। एक शिक्षक का एक कर्तव्य है कि बच्चों को शिक्षा के साथ संस्कार देना, वास्विक जिंदगी का परिचय देना, कल्पनाएं कैसे साकार करना ये सबि सिखाना, यह तो देश के अच्छे नागरिक बनाने के लिए जरूरी है। आज मोदीजी जैसे सुपुत्र पैदा होते हैं तो शिक्षक कर्तव्य है कि संस्कारों का सिंचन करना देश भक्ति की प्रेरणा देना, अच्दे सुपुत्र पैदा करना अच्छे नेता बनाना, यह भी शिक्षा देनेवालो की जिम्मेदारी है।

पर आजकल हम देखते है कि संस्कार का शिक्षा देने से भी शिक्षक ची चुराते हैं। घर में बुजुर्गों के सामने किस प्रकार का व्यवहार करना उठना बैठना, रिश्तेदारों से व्यवहार ये सबि सिखाना माता-पिता का फर्ज बनता है। संस्कार शिक्षा प्राप्त होने पर समझ में आते हैं।

म्नुष्य एक सामाजिक प्राणी है। बिना समाज वह जीवित नही रह सकता। अगर संस्कार और शिक्षा से जीवन सुगंधित करेगा तो जीवन महक उठेगा। अगर शिक्षा नहीं होगी तो उचित, अनुचित के संस्कार कहाँ से आएंगे। वर्तमान परिस्थिति में हम उसकास अनुभव कर सकते है। अपने स्वास्थ्य के प्रति जागृत होता है। परिवार की जिम्मेदारी उठा सकाता है।